© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 05 | Hindi | July - September 2017

सुधार आंदोलनों से अंधविष्वास के स्थान पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदय

Pardeep Kumar : Research Scholar, MDU,Rohtak, V.P.O.- Hamirgarh Distt.-Jind (Haryana).INDIA

ABSTRACT :

भारत मे अन्धविश्वास तथा बाहय अडम्बर बुद्ध काल में भी थे। जिसके कारण पशुओं की बलि दी जाती थी। फिर मध्यकाल मे अन्धविश्वासो को भक्ति तथा सुफी आन्दोलनो ने समाप्त करने का कुछ हद तक प्रयास किया था। लेकिन 7 वीं 18 वीं शताब्दी मे समाज मे हर जगह अन्धविश्वास जाति प्रथा, बलि प्रथा, दहेज प्रथा, सती प्रथा, शिशु वध प्रथा, कन्या वध, इत्यादि कई तरह के अन्धविश्वास तथा कई गलत प्रथाएं थी। यह सच है कि अंग्रेजो ने भारत का बहुत अभि शोषण किया लेकिन उन्होने भारत मे कई आर्थिक सुधार भी किए। पुर्नजागरण के कारण परिचय यूरोप मे लोगो मे जागृति पैदा हो गई थी। अब वह अन्धविश्वास से उपर उठकर मानवतावादी तथा प्रत्येक चीज मे विज्ञानिक दृष्टिकोण से देखते थे। इसके कारण उन्होने पूरे विश्व मे अन्धविश्वास के स्थान पर विज्ञानिक दृष्टिकोण को बढावा दिया। उनमे शिक्षा पाकर भारतीय विद्वान राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द ने भी भारतीय संस्कृति मे अन्धविश्वासो को समाप्त करने लिए आन्दोलन किए।

ISSN : 2348-5612 © URR
9 770234 856124

यूरोप ये का मध्यकाल कोई पूर्णतः अन्धकार युग नही था किन्तु इस काल के अंत के आस–पास ऐसी परिस्थितियां जरूर पैदा हुई, जिन्होने मनुष्य को चेतनायुक्त बनाया। यही चेतना पुर्नर्जागरण कहलाती है। इस क्षेत्र मे फ्रांस के पीटर उमबेलार, इंग्लैण्ड के रोजर बेकन, ईटली के दांते के प्रयास प्रशंसनीय रहे। सर्वप्रथम उन्होने अंधविश्वास के स्थान पर वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करने

मानव की दुर्बलताओं की पहचानने की प्रेरणा दी। साधारणतया आधुनिक यूरोप का आरम्भ पुनर्जागरण से ही माना जाता है क्योकि पुर्नजागरण ने यूरोप मे विचार की स्वतंत्रता, वैज्ञानिक एवं आलोचनात्मक दृष्टि, चर्च के प्रभुत्व से कला एवं साहित्य की भक्ति तथा प्रादेशिक भाषाओं के विकास को सम्भव बनाया।[1]

धर्म सुधार आन्दोलनों का ज्यादा जोर धार्मिक सुधारों की तरफ ही था, फिर भी इनमे से किसी भी आंदोलन का चरित्र पूरी तरह धार्मिक नही था। इसकी अंत प्रेरणा भी मानववाद। परलोक और मोक्ष जैसी बातें इनका पहलू नही था। बल्कि इनका सारा जोर इहलौकिक अस्तित्व पर था। राम मोहन राम अगर परलोक के संभावित अस्तित्व की बात को मानने को तैयार नही थे। 19 वीं सदी का भारतीय समाज पूरी तरह धार्मिक अंधविश्वासो के जाल मे जकड़ा हुआ था और इसके चलते सामाजिक सुधार की कोई गुंजाइश नही थी।

मैक्स वेबर ने लिखा है कि हिन्दू धर्म दरअसल ''जादू अंधविश्वास और अध्यात्मकवाद की खिचड़ी बनकर रह गया था। ईश्वर की पूजा की जगह प्रभु बलि और शारीरिक भातना जैसी जघन्भ प्रयास का सिलसिला शुरू हो गया था। राजा राममोहन राय के अनुसार, इन पूजारियो ने धर्म को धोखाधड़ी और पाखंड के तंत्र मे बदल दिया था।[2]

औरंगजेब की मृत्यु के बाद भारत का प्रशासनिक ढांचा चरमराने लगा था। अंग्रेजों ने इसे कमजोर और अंतत धवस्त कर दिया। अंग्रेजो के अभिषेक शोषण का प्रभाव समाज पर भी पड़ा। सरकार ने समाज की तरफ कोई ध्यान नही दिया। अतः देश की स्थिति सुधारने के लिए कोई प्रयत्न नही हुआ। ऐसी हालत मे आर्थिक विभिन्नता के साथ सामाजिक कुरीतियां, भेदभाव एवं धार्मिक अंधविश्वासों बढ़ते गए। परिणाम यह है कि 18 वी शताब्दी के समाप्त होते–2 भारत पिछड़ेपन की सीमा तक पहुंच गया।

अंग्रेजो की राजनीतिक गतिविधियों, प्रशासनिक व्यवस्थाओं तथा अर्थिक शोषण के साथ–2 भारत के जन जीवन मे परिचय के तमाम आधुनिक विचारो एवं ज्ञान का भी प्रवेश हुआ। भारतीय समाज पर उनके प्रबद्ध एवं विकसित विचारों का तुरंत असर हुआ और एक सामाजिक और सांस्कृकि जागृति शरू हो गई।

धर्मसुधार आन्दोलन ने ना केवल अन्धविश्वास को समाप्त किया बल्कि समाज मे भी कई प्रकार के सुधार किए। उन्होने सामाजिक संस्थाओं और संवधे केह नवनिर्माण का भी कार्य किया। जातिगत श्रेणी श्रृंखला स्त्री पुरूष की विषमता, अस्पृश्यता और सामाजिक वर्जना। इसलिए फूल फल रहे थे कि उन्हें कार्य का प्रक्षय प्राप्त था। इसलिए समाज सुधार सभी धर्म सुधार आन्दोलनों का अनिवार्य लक्ष्य था। धर्म सुधार के आन्दोलन के लिए धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधार के लिए सर्वव्यापी आंदोलन करना आवश्यक था। उन्होने बहुदेवाद और मूर्तिपूजा के खिलाफ तो संघर्ष किया ही साथ ही जाति प्रथा और विदेश यात्रा संबंधी निषेध पर भी चोट की। धर्म के क्षेत्र मे ब्राहणों के एकाधिकार पर भी इन आदोलनो ने अघाात किया और इन सबके पीछे मूल उद्देश्य यह भी किन जिन पुरानी संस्थाओं, प्रथाओं को खत्म करने की कोशिश की गई थी, वे राष्ट्रीय प्रगति मे बाधक भी और राष्ट्रीय प्रगति के लिए सभी दलों और व्यक्यितों की समानता और स्वतंत्रता के सिद्धान्त पर आधारित राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता।[3]

अंग्रेजो से भारत की हार का कारण जब पता लगया तो कुछ बुद्धिमान भारतीयों ने देश की दुर्दशा, पिछड़ेपन और विदेशियों से हार के कारणो मे भारतीय अभी भी परमपरागत विचारों, रीति रिवाजों एवं समस्याओं मे विश्वास जमाए बैठे थे। लेकिन उनमें से कुछ ने संपर्क मे आते ही परिचय के नए विचारो एवं ज्ञान के महत्व को पहचाना। परिचय के वैज्ञानिक ज्ञान, बुद्धिमान

के सिद्धान्त और मानवतावाद का इन प्रबुद्ध भारतीयो पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इस तरह बौद्धिक स्तर पर भारतीयों आस्था एवं दृष्टिकोण मे महत्वपूर्ण परिवर्तन आया और धर्म और समाज के क्षेत्र मे सुधार का युग शुरू हो गया। ईसाई हिन्दुओं की किन कमजोरियों का फायदा उठा रहे है। जात–पात अंधविश्वास और निरर्थक आंबडरो के परिणामस्वरूप उस समय खुद हिन्दू धर्म एवं समाज निष्क्रिय और शक्तिहीन हो गया था तथा हिंदू समाज का निचला तबका सामाजिक सम्मान और आर्थिक सुविधाओं के लिए ईसाई धर्म को स्वीकार करने लगा था। अतः हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए उसमे सुधार आवश्यक प्रतीत होने लगा था।[4]

19 वीं सदी के पहले दशको मे पाश्चात्य प्रभाव के कारण के कारण आलोचनाओ और धार्मिक सुधार प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। इस शताब्दी के उतरार्ध मे यह प्रक्रिया और तेज हुई। ईसाइयत को चुनौती के हिन्दू और मुसलमानो को अपने घर सम्हालने के लिए उतेजित किया था। इन दोनो धर्मो को समाज मे अब गया कि अंधविश्वासो, रूढियों, बयकाने अनुष्ठानो के कारण इनको नुकसान हो रहा है। और इनका फायदा ईसाई धर्म के लोग उठा रहे है। हिंदू धर्म और ईस्लाम दोनो इन बुराईयों से छुटकारा चाहते थे, ताकि अध्यात्मिक जीवन की धारा साफ और दृष्ट होकर बहे और व्यक्ति तथा समाज को स्वतंत्रता और सुख की और ले जा सकें। अध्यात्मिक जागृति तथा धार्मिक सुधार की कामना स्वभाविक रूप से मनुष्यों के मन को उस प्राचीनकाल की और ले गई, जबकि उनका धर्म उज्जवल और विशुद्ध रूप में था। सभी धार्मिक पुनसंगठन तथा नैतिक सुधार एक ही धर्म मानने वालों को एक करना चाहते थे। पर इन धार्मिक आन्दोलनो का सबसे दिलचस्प नतीजा यह हुआ कि इससे एक बुद्धिवादी दृष्टिकोण पैदा हुआ। इन धार्मिक वाद विवाद से कुछ हुआ ही था न हुआ हो, उनसे व्यक्तिवाद का विकास अवश्य हुआ जो आधुनिक धर्मनिरपेक्ष चिंतन का आधार है। राजनेतिक तथा धार्मिक प्रभावों के साथ मिलकर व्यक्तिवाद ने राष्ट्रवाद को बहुत

शक्तिशाली उतेजना दी। इसी दृष्टि से स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास मे इन धार्मिक आंदोलनो पर विचार करना प्रांसगिक हो जाता है।[5]

समाज के अंदर इस प्रकार का अंधविश्वास था। इस समय छूआछूत का विचार जो हिन्दू धर्म का अभिन्न अंग था छोड़ दिया गया। इसी प्रकार कुछ शाक सब्जियों, जिन्हे अपवित्र समझ जाता था जैसे प्यास लहसून, चुकुन्दर, टमाटर, अदरक इत्यादि के विषम मे समाज के विचारो मे परिवर्तन आया। इस प्रकार समाज के दैनिक कर्मकाणडो मे भी परिवर्तन आए। तो इस प्रकार समाज मे अन्धविवास व्यक्ति के रहन सहन खान पान हर जगह फैला हुआ था। विदेशों का भारत पर आक्रमण करना भी एवं अन्धविश्वास के कारण सफल हो सका हमारे पुरोहित समझते मे कि भगवान अपने अपने दुश्मन से रक्षा करेगा। इनकी अन्धविश्वासों के कारण भारत गुलाम रहा। 18 वीं शताब्दी मे यूरोप मे एक नवीन बौद्धिक लहर चल रही थी। जिसके फलस्वरूप एक जागृति के युग का सुत्रपात हुआ। तर्कवाद तथा अन्वेषण की भावना ने यूरोपीय समाज को एक प्रगति प्रदान की। विज्ञान तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के राजनितिक सैनिक, अभिषेक तथा धार्मिक सभी पक्षो को प्रभावित किया और अब यूरोप सभ्यता का अग्रणी महाद्वीप था। उसके विपरीत भारत एक निश्चल, निष्प्राण तथा गिरते हुए समाज का चित्र प्रस्तुत करता था। कुछ परिपक्व व्यक्ति जैसे राज राम मोहनराय ने पाश्चात्य विचारों से प्रभावित हुए परन्तु उन्होने हिन्दू धर्म तथा समाज से नाता तोड़ने से इंकार कर दिया इनका विचार था कि हिन्दू धर्म न समाज मे सुधार होना चाहिए और हमे पूरी तथा परिचय के विचारो को स्वीकार करने को तत्पर नही था। वह भारत को यूरोप की एक निर्जीव अनुकूलि बनाने को उधत नही आधुनिक राष्ट्रवाद के प्रकाश मे प्रेरणा लेना चाहता था यह नवीन हिन्दू धर्म यह कहता था कि यूरोप को भारतीय अध्यातमक से बहुत कुछ सीखना है।

यह नवीन पाश्यात्य शिक्षित वर्ग, तर्कवाद, विज्ञानवाद तथा मानववाद से बहुत प्रभावित हुआ। भारतीय नेताओ ने इस नवज्ञान से प्रभावित होकर अन्दर से हिन्दू धर्म को सुधाराने कर प्रयत्न किया और अन्धिविश्वास मूर्तिपूजा तथा तीर्थयात्रा इत्यादि को तर्क के तराजू मे तौल कर धर्म मे सुधार किया। 19 वीं शताब्दी मे भारतीय समाज धार्मिक अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियो से जकड़ा हुआ था। हिन्दू समाज बुराईयों, बर्बरता एवं अंधविश्वासो से ओतप्रोत था। पुरोहित, समाज मे अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाये हुये थे। तथा जनसामान्य पर विभिन्न कर्मकांडो तथा निरर्थक धार्मिक कृत्वों की सहायता वर्चस्व स्थापित कर चुके थे। उन्होने शिक्षा ज्ञान एवं धार्मिक क्रियाकलापो को अपना विशेषधिकार बताया तथा इनकी सहायता से जनसामान्य के मनोमस्त्तिट पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की चेष्टा की। समाज मे सबसे निम्न स्थिति स्त्रियों की भी। लड़की का जन्म अपशकुन, उसका निवाह बोझ एवं वैघत्म श्राप समझा जाता था। जन्म के पश्चात बालिकाऔ की हत्या दी थी। स्त्रियो का वैवाहिक जीवन अत्यंत दयनीय वं संघर्षपूर्ण था। यदि किसी स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती थी। तो उसे बलपूर्वक पति की चिता मे जलने को बाध्य किया था। इसे सती प्रथा के नाम से जाना जाता था। सती प्रथा भी समाज की एक महत्वपूर्ण बुराई थी। वर्ण या जाति का निर्धारण वैदि कर्मकाण्डो के आधार पर होता था इस जाति व्यवस्था की सबसे निचली सीढी पर अनुसूचित जाति के लोग थे।[6]

जिन्हे समाज मे दृष्टि से देखा जाता था तथा अछूत माना जाता था। इन अछूतो या अश्पृश्यो की संख्या पूरी हिन्दू जनसंख्या का 20 प्रतिशत से भी अधिक थी। अश्पृश्य भेदभाव अनके प्रतिबंधो के शिकार थे। माना सभ्यता एवं प्रतिष्ठा पर मह कुरीति एक शर्मनाक दाग था। भारत मे उपनिवेशी शसन की स्थापना के पश्चात देश मे अंग्रेजी सभ्यता एवं संस्कृति के प्रसार हेतू सुनियोजित प्रयास किये गये शहरीकरण तथा आधुनिकीरण ने भी लोगो के विचारो को प्रभावित

किया। इन नवीन विचारें के विक्षोम ने भारतीय संस्कृति मे प्रसार की भावना उत्पन्न की तथा ज्ञान का प्रसार हुआ। 19 वीं शताब्दी के अन्तिम दशक मे लोकतंत्र एवं राष्ट्रवाद के उत्थान ने भारतीयों एवं भारत की सामाजिक धार्मिक संस्थाओ को भी प्रभावित करना प्रारंभ कर दिया। इन कारको ने शीघ्र वे ही पुर्नजागरण की प्रक्रिया के उदभव एवं विकास के लिए पृष्ठभूमि तैयार की विभिन्न कारक यथा राष्ट्रवादी भावनाओ के विकास नयी आर्थिक शक्तियों के उदय, शिक्षा का प्रसार, पाश्चात्य मूल्यों एवं संस्कृति के प्रभाव तथा विष्व समुदाय को सशक्त करने की सोच ने सुधार के मार्ग को प्रशस्त किया।

हम अन्त मे यह कह सकते है कि अंग्रेजी शिक्षा तथा विद्वानो के सहयोग तथा भारतीय समाज सुधारकों के प्रयासो से भारतीय समाज मे कई तरह की गलत प्रथाएं बंद हो गई तथा भारतीय समाज मे एक नई ज्ञान की विचारधारा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की उदय हुआ जो आज के भारत मे धर्मनिरपेक्ष तथा लोकतन्त्र का आधार है।

संदर्भ सूचि :–

1. जैन माथूर, आधुनिक विष्व का इतिहास, जैन प्रकाषन मंदिर जयपुर, 2007, पृ. 3
2. विपन चन्द्र व अन्य, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेषालय दिल्ली विष्वविद्यालय 2011, पृ. 50–60
3. ऐ.आर. देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि 1948 नई दिल्ली पृ. 224–25
4. रामलखन शुक्ल आधुनिक भारत का इतिहास नई दिल्ली, 2006 पृ. 343–47
5. ताराचंद भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास (दूसरा खण्ड) प्रकाषन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 2007, पृ. 368–71

6- राजीव अहीर आधुनिक भारत का इतिहास स्पेक्टम बुक्स 2014, नई दिल्ली, पृ. 23–25